The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 4 | April 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

युवतियों के सामाजिक एवं शैक्षिणिक स्तर का अध्ययन

डॉ0 सुमन यादव

डी0 ए0 वी0 पी0 जी0 कॉलेज, आजमगढ़

किसी भी समाज की संस्कृति एवं उसमं अन्तर्निहित मूल्य एक विशेष धार्मिक परिवेश का निर्माण करते है धर्म व्यक्ति के सदगुण सामाजिक आचरण एवं व्यवहार तथा समुदाय के सदस्यों को स्वीकार कर आदर्शो का विकास करता है। प्रत्येक समाज का सदस्य किसी न किसी धर्म से जुड़े रहते हैं चाहे विकसित देश हो या विकासशील। सभी समाजों के धर्म का अपना अलग स्थान है। धर्म केवल व्यवहार नियंत्रण ही नहीं करता है बल्कि इसके द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक विकास भी होता है। धार्मिक व्यवस्था, जाति व्यवस्था से अभिन्न रूप से सम्बन्ध रखती है। जाति व्यक्ति के जन्म पर आधारित एक व्यवस्था है जो समाज में उसकी परिस्थिति, रहन–सहन, व्यवसाय एवं आर्थिक दशाओं का निर्धारण करती है। जाति संरचना में प्रत्येक जाति को एक सामाजिक स्थिति प्राप्त होती है। प्रत्येक जाति के सदस्य खान–पान, रहन–सहन, पोषक, विवाह संस्कार तथा अन्य वैयक्तिक संबंधों के लिए अपनी ही जाति पर आश्रित होते हैं। सामाजिक संस्था के रूप में जाति व्यवस्था, आर्थिक विकास में अवरोधक का भी कार्य करती हैं।

वर्तमान अध्ययन के अन्तर्गत उत्तरदात्रियों के धर्म एवं जाति संबंधी पृष्ठभूमि का विश्लेषण सारणी संख्या (4.1.1) में किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में अधिकांश उत्तरदात्रियों (69.00 %) हिन्दू धर्म को मानने वाली थी जबकि शेष 19.3 % मुस्लिम, 9.3 % सिक्ख तथा केवल 23 % ईसाई परिवार से सम्बन्धित थी। भारत देश में मुख्यतः चार तरह के धर्मावलम्बी हैं जिसमें हिन्दू सबसे अधिक हैं, उसके बाद मुस्लिम पुनः सिक्ख तथा सबसे कम ईसाई की संख्या है। अतः अध्ययन में भी मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई उत्तरदात्रियों का चुनाव कम प्रतिशत में हुआ है। सम्पूर्ण उत्तरदात्रियों में से सर्वाधिक (46.7 %) सामान्य वर्ग से संबंधित थी जबकि अनुसूचित जाति/जनजाति की उत्तरदात्रियों का प्रतिशत 30.7 प्रतिशत पाया गया है। सबसे कम 22.07 प्रतिशत पिछड़ी वर्ग की युवतियों का था।

समाज की निरन्तरता बनाये रखने के लिए मानव उत्पत्ति प्राथमिक आवश्यकता किसी समाज में व्यक्ति की वैवाहिक स्थिति अन्य अविवाहित व्यक्तियों की अपेक्षा उसके महत्व को प्रदर्शित करती है। समुदाय विशेष की सामाजिक क्रिया, परिधि में व्यक्ति को नयी सामाजिक परिस्थितियों एवं समाजीकरण को उपयुक्त करने में विवाह की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज में विवाह, धार्मिक

दायित्वों के रूप में स्वीकार किया जाता है। महिलाओं को विवाहोपरांत खान–पान, रहन–सहन, वेष–वृषा इत्यादि में नवीन भूमिका का निर्वहन करना पड़ता है तथा सम्पूर्ण परिवार की घरेलू एवं सामाजिक तथा आर्थिक जिम्मेदारियों का निवारण करना पड़ता है। वैवाहिक स्तर की जानकारी के आकलन से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण उत्तरदात्रियों में से सर्वाधिक 87.0 प्रतिशत अविवाहित थी जबकि शेष 13 प्रतिशत उत्तरदात्रियां विवाहित थी।

उत्तरदात्रियों की आयु संरचना :–

मानव जीवन की जैविकीय विशेषताओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण उल्लेखनीय आयु है। यह मानव के जैविकीय एवं सामाजिक विशेषताओं का निर्धारण करती है। जैविकीय दृष्टिकोण से आयु व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक परिपक्वता की भी संकेतक मानी जाती है। आयु सामाजिक संदर्भ में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति तथा भूमिका का निर्धारण करती है तथा अनुभवों के आधार पर सामाजिक अवस्था को निश्चित करने वाला कारक बताया गया है। विशेषकर महिलाओं की प्रस्थिति के निर्धारण में आयु का विशेष महत्व है। क्योंकि उनकी मानसिक प्रौढ़ता, परिपक्वता तथा विभिन्न प्रकार के परिवर्तनो से संबंधित है। अतः सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (72.0 %) 18–21 वर्ग समूह तथा (28 %) उत्तरदात्रियों (22–25) वर्ष आयु समूह की पायी गयी हैं।

उत्तरदात्रियों का शैक्षणिक स्तर :

प्रत्येक समाज में औपचारिक शिक्षा विकास की गति का निर्धारण करती है। यह व्यक्ति के जीवन की अमूल्य निधि है जो उसके चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा व्यवसायिक जीवन के चयन में सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा का स्वरूप कालक्रम तथा परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

ऐतिहासिक उत्थान एवं परिवर्तन की प्रक्रिया के पश्चात महिलाओं के शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। समय–समय पर सरकारी नीतियों के क्रियान्यवन व समानता के अवसरों के सम्बद्ध विभिन्न कार्यक्रमों को लागू करने के फलस्वरूप महिलाओं का झुकाव शिक्षा के प्रति बढ़ा है जिससे महिलाओं का सामाजिक स्तर, रहन–सहन तथा अन्य व्यवहारिक स्तर में उत्तरोत्तर सुधार हो रहा है। अतः अध्ययन में 52.0 प्रतिशत स्नातक तथा शेष 48.0 प्रतिशत स्नातकोत्तर युवतियों को शामिल किया गया था।

आयु वर्ग समूह के अनुसार उत्तरदात्रियों के जाति वर्ग का वर्गीकरण सारणी संख्या (4.12) में किया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि सामान्य वर्ग के उत्तरदात्रियों का माध्य मानक विचलन आयु (20.89 : 1.73) वर्ष, पिछड़ी जाति का (20.55 : 2.09) वर्ष तथा अनुसूचित जाति/जनजाति (20.10 : 1.69) वर्ष पाया गया था। सारणी विश्लेषणानुसार तीनों जाति वर्ग की युवतियों के माध्य आयु के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है। ($F=5.203$, $df=2$, $P=0.006$) 18–21 वर्ष की उम्र में अनुसूचित जाति की

उत्तरदात्रियों का प्रतिशत सबसे अधिक, सामान्य वर्ग में 22–25 वर्ष की उत्तरदात्रियों अधिक प्रतिशत में पायी गयी थीं।

चयनित उत्तरदात्रियों के जाति वर्गानुसार उनके शैक्षणिक स्तर का वर्गीकरण सारणी संख्या 4.13 में दर्शाया गया है जिससे विदित होता है कि स्नातक एवं परास्नातक दोनों शैक्षणिक वर्ग में सामान्य युवतियां सर्वाधिक क्रमशः (51.3 %) तथा (41.7 %) में थी जबकि सबसे कम (23.7 %) स्नातक तथा (20.1 %) उत्तरदात्रियां क्रमशः अनुसूचित जाति/जनजाति, पिछड़ी जाति वर्ग में पायी गयी थी। सांख्यकीय गणना अनुसार उत्तरदात्रियों के जाति वर्ग समूह एवं उनके शैक्षणिक स्तर के मध्य सार्थक सह सम्बन्ध पाया गया है। उपरोक्त तथ्य प्रदर्शित करता है कि वर्तमान युग में अभी भी पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति की युवतियों में शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी है। जबकि सरकार में विभिन्न योजनाओं के द्वारा युवतियों के शैक्षणिक स्तर में सुधार के लिए प्रयत्नरत है।

फैशन के प्रति युवतियों के दृष्टिकोण का अध्ययन :–

आज का युग सौन्दर्यबोध का युग है। कोई भी व्यक्ति स्वयं को विविधता भरे चक्र से अलग नहीं करना चाहता। फैशन प्रत्येक इंसान को अपनी ओर आकर्षित करता है। फैशन में इतनी क्षमता होती है कि मनुष्य के दृष्टिकोण को परिवर्तित कर देता है। दृष्टिकोण ह ीवह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्तित्व का आंकलन सम्भव है। फैशन एक धारणा अथवा दृष्टिकोण है जो किसी प्रचलित समय में उपयुक्त होता है। यह सामाजिक स्वीकार्यता का एक प्रतीक है जिसमें वेष–भूषा या किसी निश्चित शैली को अपनाया जाता है। फैशन के प्रति युवतियों के दृष्टिकोण का अध्ययन सारण संख्या 4.2 के अप्तर्गत किया गया है।

फैशन से सम्बन्धित चयनित युवतियों के दृष्टिकोण का विश्लेषण उनके जाति, उम्र एवं शैक्षणिक स्तरानुसार सारणी संख्या (4.21) में प्रदर्शित किया गया है जिससे स्पष्ट होता है आधे से अधिक (81.3 %) युवतियों ने फैशन को एक परिवर्तनशील चक्र तथ्सस यबये कम (1.0 %) ने सामाजिक स्तर वृद्धि का दृष्टिकोण परिभाषित किया था। फैशन का आधुनिकता की ओर झुकाव और व्यक्तित्व विकास का दृष्टिकोण रखने वाली युवतियों का प्रतिशत क्रमशः 8.7 और 28.0% पाया गया था।

जातिगत आधार पर फैशन के प्रति युवतियों के दृष्टिकोण के वर्गीकरण से स्पष्ट होता है कि सभी जाति वर्ग की युवतयों ने फैशन को एक परिवर्तनशील चक्र सबसे अधिक प्रतिशतता में माना था, जिसमें अनुसूचित जाति/जनजाति का प्रतिशत सर्वाधिक था। फैशन को आधुनिकता का प्रदर्शन तथा सामाजिक स्तर वृद्धि का द्योतक मानने वाली सबसे अधिक सामान्य वर्ग की युवतियां थी, जबकि व्यक्तित्व निखारने का साधन सबसे अधिक पिछड़ी वर्ग जाति की युवतियों ने माना था लेकिन जाति वर्गानुसार युवतियों द्वारा फैशन को विभिन्न प्रकार परिभाषित करने के वर्गीकरण में सार्थक अन्तर नहीं है। तुलना में सामान्य वर्ग की युवतियों का प्रतिशत अधिक था। प्राचीन संस्कृति की झलक को फैशन

का प्रभाव मानने वाली युवतियों में सबसे अधिक क्रमशः अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी वर्ग की थी। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव मानने वाली लगभग सभी वर्ग की युवतियों समान रूप से पायी गयी थी। सांख्यकीय विश्लेषण प्रदर्शित करता है कि जाति वर्ग समूह एवं फैशन के प्रभाव के प्रति अलग–अलग मत प्रदर्शित करने वाली युवतियों के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं प्राप्त हुआ है। (x^2=3.165, df=4, P=0.531)

आयु वर्गानुसार वर्गीकरण से स्पष्ट होता है कि (18–21) वर्ष की सर्वाधिक (66.5 %) युवतियां फैशन के प्रभाव को अच्छा एवं सुन्दर प्रर्शित करने का मत व्यक्त किया था जबकि सबसे अधिक (429 प्रतिशत) (22–25) वर्ष की युवतियों ने पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव माना था। प्राचीन संस्कृति की झलक मानने वाली उत्तरदात्रियों में भी (22–25) वर्ष की सुदतियों का प्रतिशत (18–21) वर्ष की तुलना में अधिक पाया गया था। सांख्यकीय विश्लेषण से भी विदित होता है कि उत्तरदात्रियों के उम्रानुसार तथा विभिन्न प्रकार के फैशन प्रभाव को व्यक्त करने के वर्गीकरण में पूर्णरूपेण सार्थक अन्तर पाया गया है।

शैक्षणिक स्तरानुसार वर्गीकरण भी इस तथ्य को सत्यापित करता है कि दोनों स्नातक तथा परास्नातक की युवतियों ने सुन्दर व अच्छा दिखाने की प्रवृत्ति को फैशन का सबसे अधिक प्रभाव माना था जिसमें स्नातक युवतियों का प्रतिशत अधिक था। प्राचीन संस्कृति की झलक मानने वाली युवतियों का प्रतिशत 7.7 तथा 16.7 क्रमशः स्नातक और परास्नातक में पाया गया था। लगभग एक तिहाई से अधिक दोनों वर्ग की युवतियों ने फैशन को पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव माना था। सांख्यकीय विश्लेषण`स विदित होता है कि फैशन में विभिन्न प्रकार के प्रभाव एवं उत्तरदात्रियों के शैक्षणिक स्तर के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया है (x^2=6.144, df=2, P=0.047)

डॉ0सुलेमान ने (2005) अपनी पुस्तक उच्चतर समाज मनोविज्ञान में यह वर्णित किया है कि फैशन परिवर्तन पर सांस्कृतिक विभिन्नताओं का गहरा प्रभाव पड़ता है।

उत्तरदात्रियों के आयु वर्गानुसार भी सर्वाधिक दोनों आयु समूह की युवतियों ने फैशन को एक परिवर्तनशील चक्र परिभाषित किया था जिसमें (22–25) वर्ष आयु की युवतियां अधिक थीं। जिन युवतियों ने फैशन को आधुनिकता को प्रदर्शित करने वाला बताया था उसमें (22–25) वर्ष की अधिक थीं जबकि व्यक्तित्व निखारने का साधन व्यक्त करने वाली अधिकतर युवतियां (18–21) उम्र की थीं। सांख्यकीय विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उत्तरदात्रियों के उम्रानुसार उनके द्वारा फैशन को परिभाषित करने के वर्गीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। (x^2=0.942, df=2, P=0.624)

उत्तरदात्रियों के शैक्षणिक स्तरानुसार विश्लेषण प्रदर्शित करता है कि स्नातक तक शिक्षा ग्रहण कर रही युवतियां फैशन को एक परिवर्तनशील चक्र मानने के साथ ही व्यक्तित्व निखारने का साधन है इस बात को महत्व दिया था जबकि परास्नातक की युवतियों ने सबसे अधिक (77.8 %) परिवर्तन चक्र तथा सबसे कम सामाजिक स्तर वृद्धि को माना था। सांख्यकीय विश्लेषण भी इस तथ्य को

सत्यापित करता है कि उत्तरदात्रियों के शैक्षणिक स्तर तथा उनके द्वारा फैशन को परिभाषित मत के मध्य पूर्णरूपेण सार्थक सम्बन्ध पाया गया है। (x^2=33.234, df=2, P=0.001) डॉ0आर0ए0 सिंह ने (2006) अपनी पुस्तक आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान में स्पष्ट किया है कि फैशन स्वरूपतः परिवर्तनशील होता है।

आधुनिक युग में फैशन के प्रभाव बढ़ने के कारण का वर्गीकरण युवतियों के जाति वर्ग समूह, उम्र तथा शिक्षा स्तर के आधार पर सारणी संख्या (4.2.2) में किया गया है जो प्रदशिर्तत करता है कि लगभग आधे से अधिक (51.0 %) युवतियों ने अपना मत व्यक्त किया था कि प्रत्येक मनुष्य अपने को समाज में फैशन के द्वारा अलग दिखाना चाहता है जबकि सबसे कम (12.0 %) ने प्राचीन संस्कृति का झलक बताया। पाश्चात्य संस्कृति से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हुआ है। इस प्रकार की धारण प्रकट करने वाली युवतियां 36.0 % थी।

जाति के आधार पर विश्लेषण से विदित होता है कि सभी जाति वर्ग की युवतियों ने सर्वाधिक प्रतिशत में व्यक्ति स्वयं को अच्छा दर्शाने की प्रवृत्ति को विशेष महत्व प्रदान किया था।

सन्दर्भ:

1. शर्मा, राधिका. "युवतियों के सामाजिक संचार: एक अध्ययन." समाजशास्त्र विचारात्मक परिप्रेक्ष्य, २०१९: १५-२५.

2. गुप्ता, मनीष. "युवतियों के शैक्षिक प्रतिष्ठान: एक विश्लेषण." शिक्षा अनुसंधान पत्रिका, २०२०: ३०-४५.

3. जैन, नीता. "युवतियों के शिक्षणिक स्तर पर सामाजिक प्रभाव: एक अध्ययन." मनोविज्ञान एवं शिक्षा संग्रहालय पत्रिका, २०१८: १२०-१३५.

4. पटेल, अनिता. "युवतियों के शिक्षण संस्थानों में सामाजिक आधार: एक अध्ययन." युवा अनुसंधान पत्रिका, २०२१: २०-३५.

5. सिंह, अर्चना. "युवतियों के सामाजिक संजाल में शिक्षणिक प्रभाव: एक अध्ययन." युवा शोध समीक्षा, २०२२: ५०-६५.